प्रस्तावनाः फेथ रिंग्गोल्ड, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

# शान्ति के लिए तुम क्या करोगे?

## 9/11 का न्यू यॉर्क शहर के किशोरों पर पड़ा असर

प्रस्तावनाः फेथ रिंग्गोल्ड, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

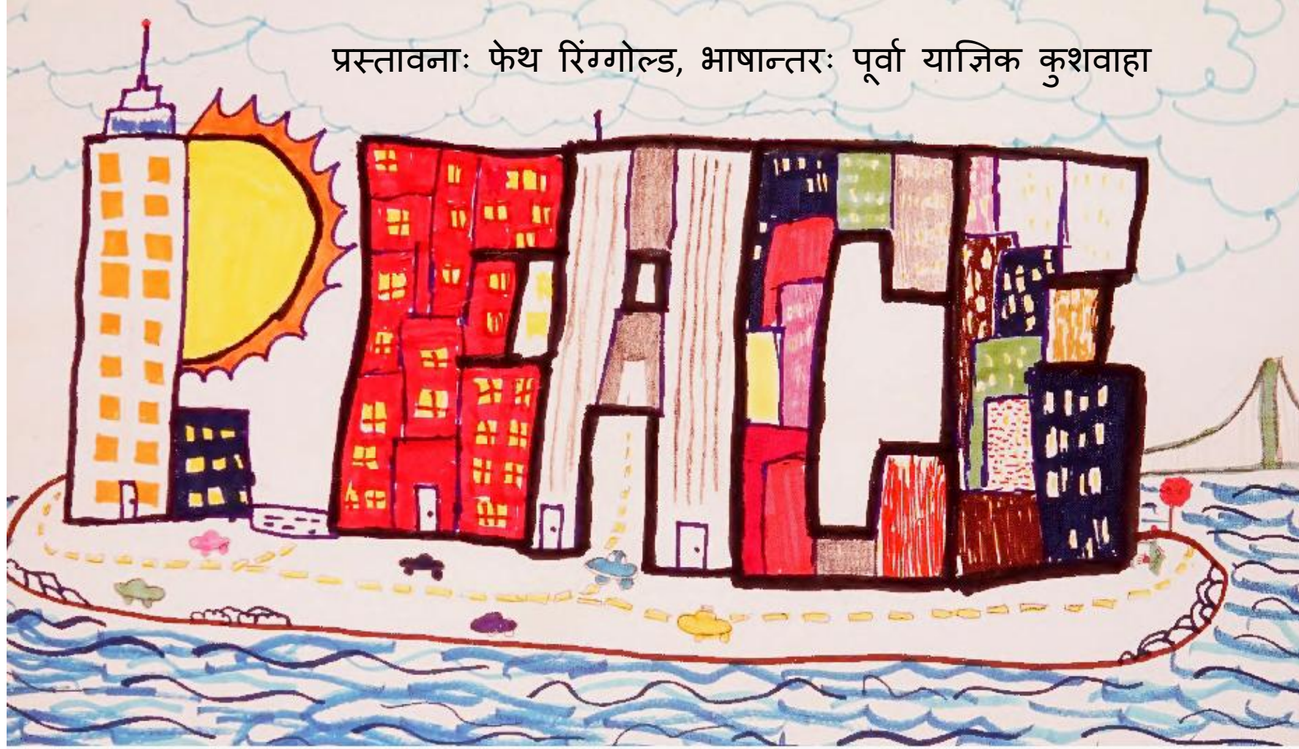


# शान्ति के लिए तुम क्या करोगे?

## 9/11 का न्यू यॉर्क शहर के किशोरों पर पड़ा असर

# प्रस्तावना

11 सितम्बर 2001 को समय तब जैसे ठहर-सा गया था, जब हम अविश्वास के साथ देखते रह गए थे। उस मनहूस मंगलवार की सुबह हज़ारों लोग शोक मना रहे थे। 9/11 की घटना के बाद से हम सब की ज़िन्दगियाँ फर्क हो चुकी हैं।

जब मुझे *शान्ति के लिए तुम क्या करोगे? 9/11 का न्यू यॉर्क शहर के किशोरों पर पड़ा* असर परियोजना से जुड़ने को कहा गया मेरा दिल खुश हो गया। सुन्दर सहयोग से न्यू यॉर्क के 11 से 19 वर्ष के किशोरों को एक साथ ला, उस भयावह दिन की प्रतिक्रियाएं संकलित की गईं। उनका काव्यात्मक वर्णन संवेदनशीलता और प्रेम की भेंट है। मैं इन किशारों के सहज औदार्य से चकित रह गई। मुझे इस पुस्तक के चित्रों और भयावह काव्य ने गहराई से प्रेरित किया।

मैं नहीं जानती कि मैं कभी हमारे विश्व में शान्ति देख सकूंगी या नहीं। पर जो मैं जानती हूँ वह यह है कि शान्ति को पाने के लिए ऐसे युवाओं की ज़रूरत होती है, जो भावनात्मक रूप से विकसित हों, जिनका मस्तिष्क रचनात्मक हों, और दिल खुले हों। हमें शान्ति में विश्वास करने के लिए हिम्मत जुटानी होगी। हो सकता है कि किसी दिन शान्ति का ऐसा चीत्कार उठे जो दुनिया भर में गूंजे। तब तक हम न्यू यॉर्क शहर के किशोरों का समर्थन करें, जिन्होंने एक महत्वपूर्ण सवाल उठाया है। सवाल सरल और स्पष्ट है। हम सबको इसका जवाब खुले दिल ओर ईमानदारी से देना होगाः

तुम शान्ति के लिए क्या करोगे?

- फेथ रिंग्गोल्ड

11 सितम्बर, 2004

11 सितम्बर का दिन स्कूल का था।
मैं सामाजिक अध्ययन की कक्षा में थी। कक्षाएं बेहद शान्त थीं।
मैंने ग़ौर किया कि लोगों के पास घर लौट आने के फोन आने लगे।
माता-पिता बच्चों को घर लिवा ले जाने को आने लगे।
क्या हो रहा था, हमें पता ही नहीं था।

मैंने अपनी पाँचवी कक्षा की शिक्षिका को रोते देखा। सो, मुझे लगा कि कुछ तो हुआ है।
मेरी पूरी कक्षा असमंजस में थी।
तब उन्होंने मेरा नाम पुकारा, और कहा कि मैं घर जा रही हूँ। मेरी माँ मुझे लेने आईं हैं।
मैं स्कूल भवन से बाहर निकली और बस की तरफ बढ़ी। मैंने पाया कि बस चालू ही नहीं थी।
मुझे मेरी माँ दिखीं, वे बदहवास-सी थीं, क्योंकि वे मुझे तलाश रही थीं।

मैंने माँ से पूछा कि आख़िर हुआ क्या है?

वे बेहद फिक्रमन्द थीं।

उन्होंने हवाई जहाज़ अगुआ कर लिए थे,

जो ट्विन-टावर्स से जा टकराए थे।

स्थिति तब और विकट बन गई जब वर्ल्ड ट्रेड सेंटर ढहा और हज़ारों लोग मारे गए।

मेरी माँ की पक्की सहेली मारी गईं थीं, मैं तब रो पड़ा।

मैंने सोचा था कि मैं अपनी नानी को फिर कभी देख ही नहीं सकूंगा।

मेरी नानी उसी समय खाने की छुट्टी लेती है,

और उस इमारत में अपनी दोस्त से मिलने जाती है।

शुक्र था कि आज उनकी काम से छुट्टी थी।

मेरी चाची ने सोचा कि उनका एक भाई
उसी इमारत में था जो ढह गई थी, वे रोने लगीं।
शुक्र है खुदा का, उनके भाई ने उन्हें फोन कर दिया,
यह बताने कि वे बिलकुल ठीक हैं।

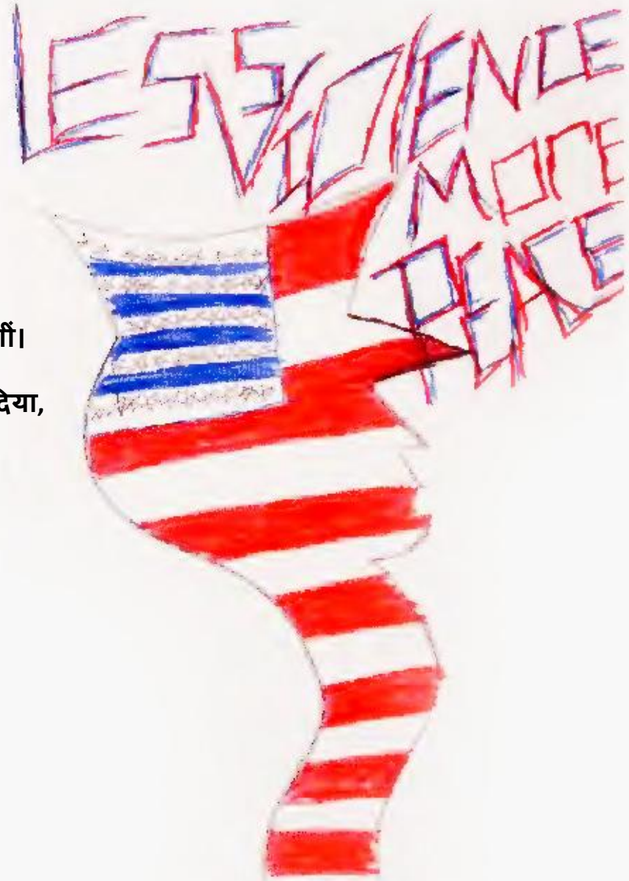

मुझे घर नहीं जाने दिया गया था, क्योंकि मेरा स्कूल (घटनास्थल के) बहुत पास था।
मैंने हवाई जहाज़ की उस नाटकीय टक्कर को और टावरों को गिरते देखा।

जब मैं घर आया मैंने टीवी खोला

सभी चैनलों पर सिर्फ खबरें ही थीं।

आप वर्ल्ड ट्रेड सेंटर से हवाई जहाज़ को टकराते देखें।

लोगों को खिड़कियों से कूदते देखें।

मैं मरने वालों के लिए दुआ करने लगा,

मैं उनके बारे में सोच रहा था।

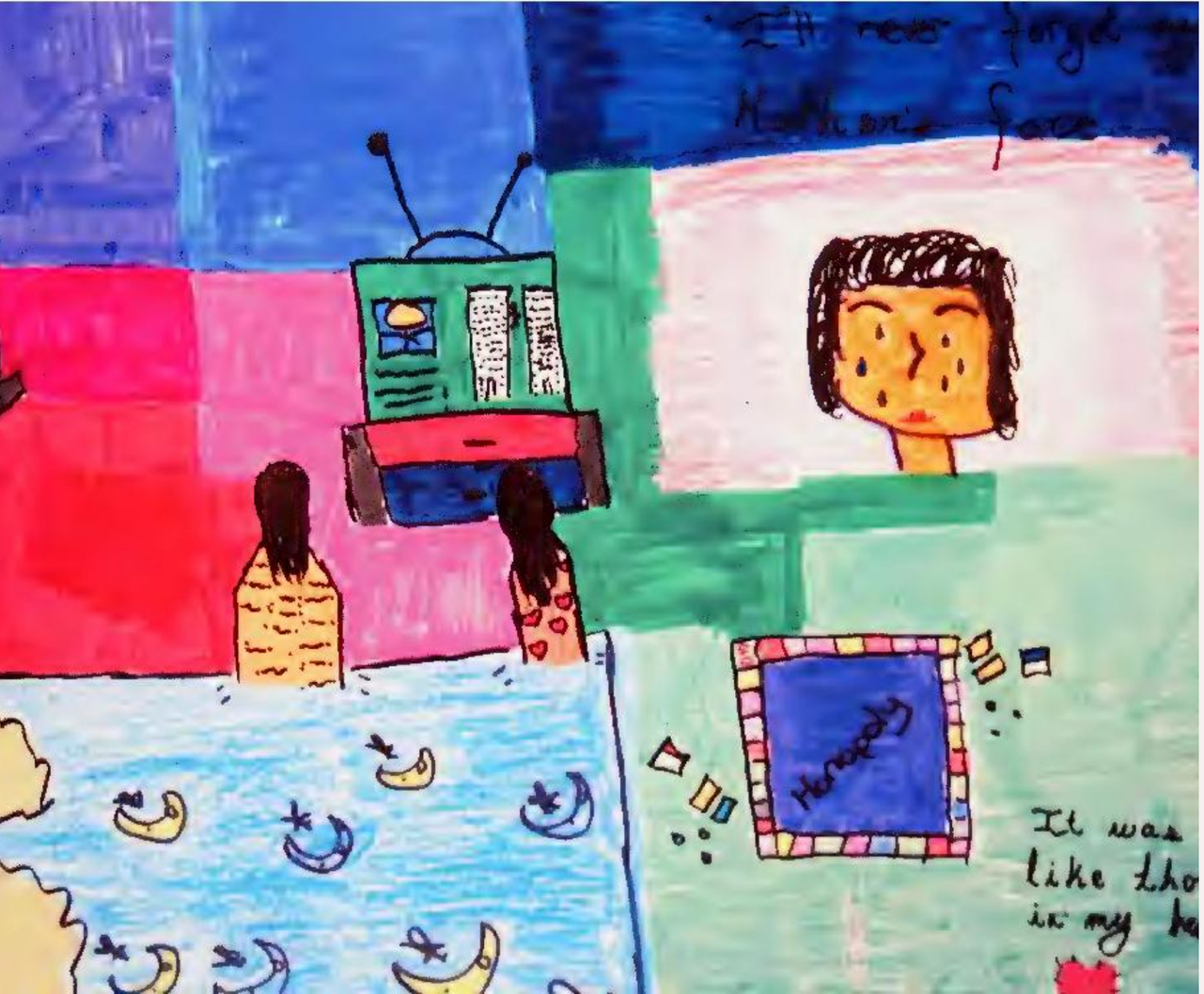


हम टीवी से चिपके बैठे थे।

जब हमने सुना कि एक हवाई जहाज़ पैन्टगॉन से टकराया है,

हम रोने लगे।

मैं अपनी माँ के चेहरे को कभी नहीं भूलंगी।

वह मेरे दिल में शूल-सा चुभता रहेगा।

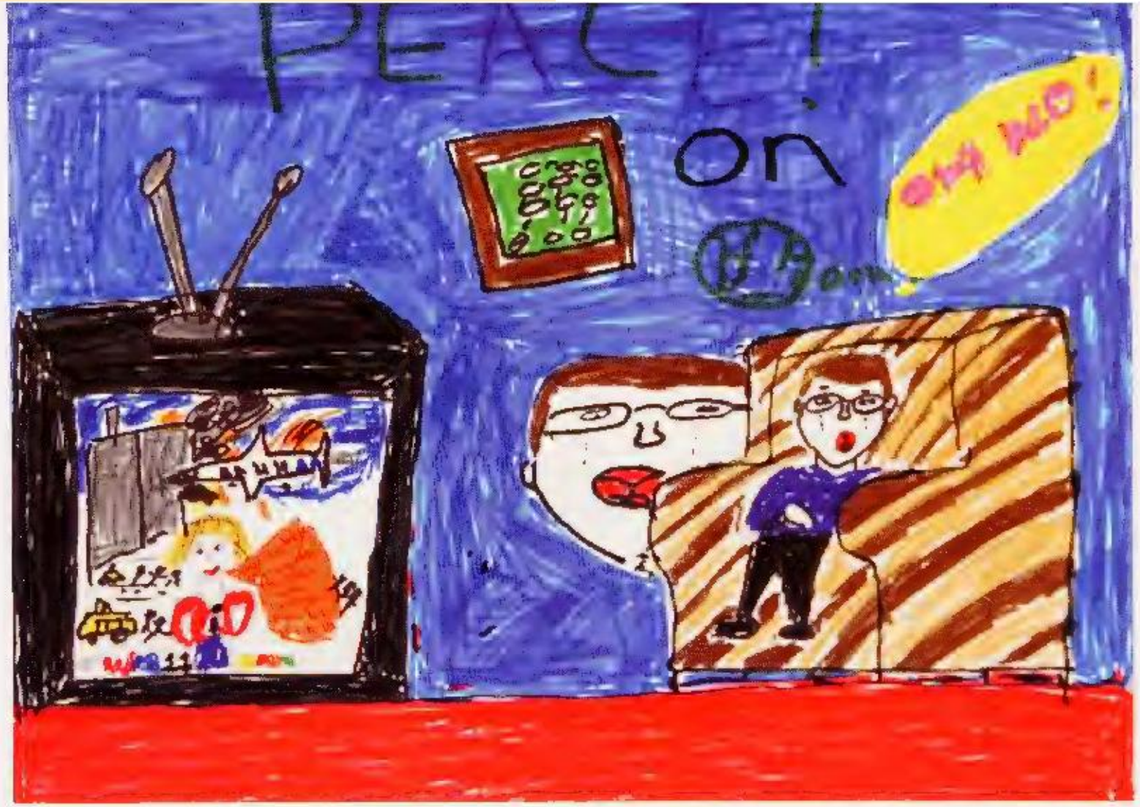


मैं सोचने लगा कि "क्या हम यह राज्य छोड़ कर
कहीं और नहीं जा सकते, कुछ समय के लिए?
पर उन्होंने खबरों में बताया कि न्यू यॉर्क छोड़ कर जाने की इजाज़त नहीं है।
लोग सिर्फ आ सकते हैं।
हम कुछ नहीं कर सकते थे।

11 सितम्बर का दिन मेरी ज़िन्दगी का सबसे ख़राब दिन था।
उस दिन बहुत से लोगों को जानें गईं।
उस दिन ने मुझे बेहद उदास कर दिया। मुझे उन परिवारों के लिए बहुत दुख हुआ
जिन्होंने अपने पिता, माँ, चाचा/मामा, दादी/नानी या परिवार के किसी भी सदस्य को खोया था।
मुझे कभी यह शक तक नहीं हुआ था कि ऐसा कुछ हो भी सकता है।

9/11 की त्रासदी कभी भुलाई नहीं जाएगी,

फिर चाहे हम कहीं के भी क्यों न हों।

मैं बहुत उदास थी कि इतने

सारे लोग नाहक ही मारे गए।

मैं उसी पल भविष्य के बारे में सोचने लगी।

मुझे उम्मीद है कि भविष्य में आज के बच्चे

सबके लिए एक बेहतर दुनिया बनाएंगे।

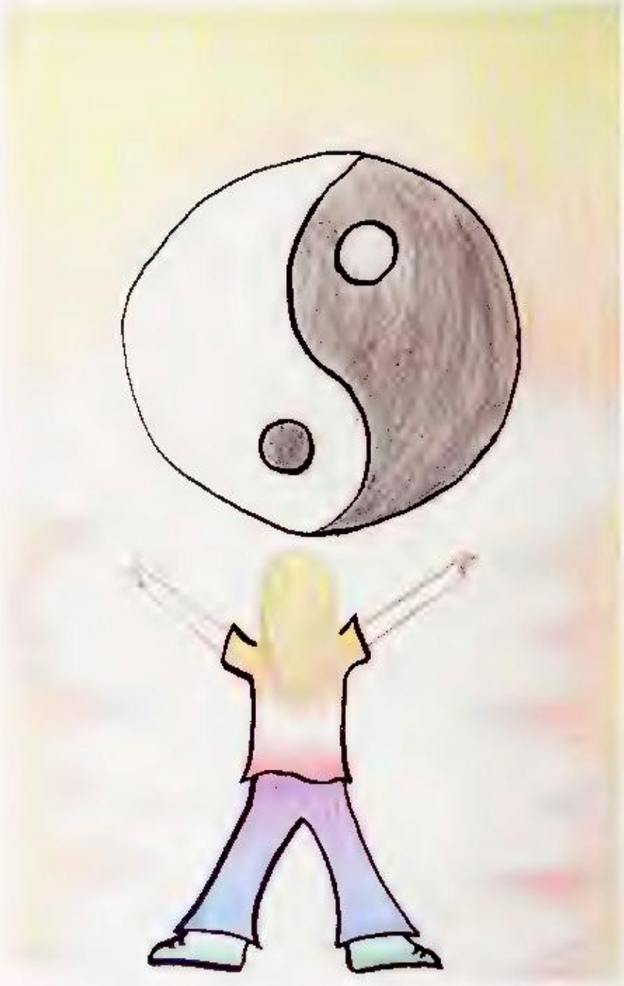

मैं सोचने लगा, "क्या अमरीका कभी पहले-सा हो भी सकेगा?"

इसने मुझे शान्ति पर सोचने को उकसाया।

पी से पीपल (लोग) जो एकजुट हों।

ई से एवरीवन (हरेक व्यक्ति) जिनसे समान बरताव हो।

ए से अराउन्ड द वर्ल्ड (दुनिया भर में) लोग आपस में शान्ति बनाएं।

सी से कन्ट्रीस् (विभिन्न देश) जो भाई-बहनों की तरह परस्पर जुड़े हों।

ई से एवरीवन (हरेक व्यक्ति) एक दिन इस लक्ष्य को निश्चित रूप से हासिल करेगा।

हमने शान्ति के लिए एक पोस्टर बनाया

जिसमें लिखा है, "शान्ति के लिए तुम क्या करोगे?"

ग़ौर करें कि उसमें 'पीस' (शान्ति) के सभी अक्षर टूटे-फूटे हैं।

हम लोगों को ही उन्हें ठीक कर वापस जोड़ना है।

हमें एकजुट हो जाना चाहिए।

आपको कभी यह नहीं लगना चाहिए

कि आप अलग-थलग हैं।

आप भी एक ही पहेली का हिस्सा हैं

और आपके बिना

पूरा चित्र कभी दिखेगा ही नहीं।

लोगों से मिलो, उनसे बातचीत करो।

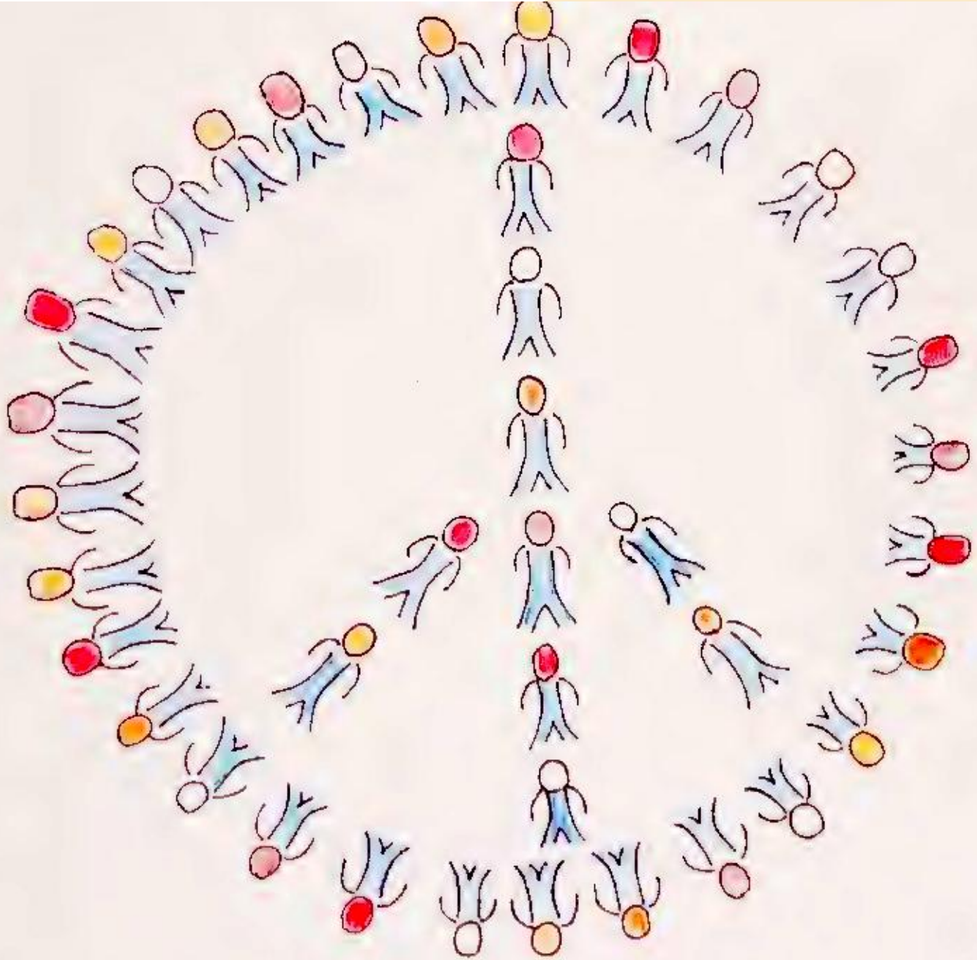

शान्ति बनाए रखने वाले ताकतवर होते हैं।

"शान्ति के लिए तुम क्या करोगे?"

पेज 2 - लीना ली

पेज 4 - आन्द्रिया पेरेज़, चार्ल्स कोलबर्ट, कार्लोस आयला, एम्बर लेयबा, ली रोमेरो

पेज 5 - ली रोमेरो, सिएरा सैनफर्ड, इमैन्युएल गरैरो, कार्लोस आयला, विएल्का गोमेज़

पेज 6 - नील रामकिसन, ली रोमेरो

पेज 7 - एम्बर लेयबा, विएल्का गोमेज़, ली रोमेरो

पेज 8 - एशली स्टीफन्स

पेज 9 - कार्लोस आयला

पेज 10 - करीम लवलेस, तामिएरा सैनफर्ड

पेज 11 - जैनिफर रॉड्रीगेज़, जैनीक्व सैनफर्ड

पेज 12 - चार्ल्स कोलबर्ट

पेज 13 - चार्ल्स कोलबर्ट

पेज 14 - आन्द्रिया पेरेज़

पेज 15 - आन्द्रिया पेरेज़

पेज 16 - गिजैला हरमैन्ज़, सिएरा सैनफर्ड

**पेज 17 - लीना ली, विएल्का गोमेज़, एम्बर लेयबा, कार्लोस आयला**

**पेज 18 - ईवा यू, मैक्सीन यू, आन्द्रिया पेरेज़, इमैन्युएल गरैरो, ली रोमेरो, कार्लोस आयला**

**पेज 19 - लीना ली, कार्लोस आयला**

**पेज 20 - कर्टिस ग्लोवर, जैनिफर रौद्रीगेज़**

**पेज 21 - कर्टिस ग्लोवर, जैनिफर रौद्रीगेज़**

**पेज 22 - ज़ुबैर हक़**

**पेज 23 - ईवा ली, हाइदी पार्क, ज़ुबैर हक़**

**पेज 24 - मिसरीन आवावदे, इमैन्युएल गरैरो**

**पेज 25 - नादिरा पैरासुद, कार्लोस आयला**

**पेज 26 - जैसिका लेओ, ईवा यू, मैक्सीन यू, जैनिफर झाओ, ज़ुबैर हक़**

**पेज 27 - जैसिका लेओ, ज़ुबैर हक़**

**पेज 28 - हैनरी साएन्ज़, हाइदी पार्क**

**पेज 29 - मुराद अवावदे,**

**पेज 30 - विएल्का गोमेज़, ली रोमेरो।**

हम इस रचनात्मक प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने के लिए प्रख्यात कलाकार फेथ रिंग्गोल्ड के तहेदिल से शुक्रगुज़ार हैं। उन्होंने न केवल किशोरों के चित्रों का चयन किया, बल्की सहज औदार्य से इस पुस्तक की प्रस्तावना भी लिखी।
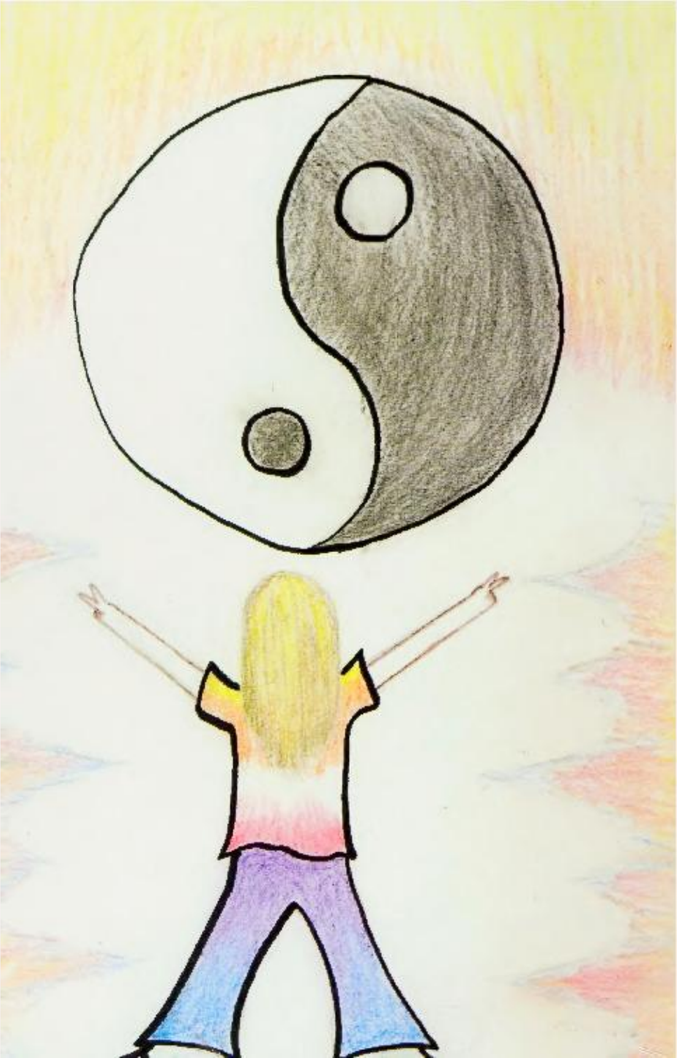
न्यू यॉर्क के किशोरों को उनके अनुभव साझा करने के लिए एकत्रित करने में हम हमारे सामुदायिक कार्यकर्ताओं के आभारी हैं - ब्राडवे हाउसिंग कम्युनिटी की आना, ओफेलिया तथा राफायेला कैपलन; चाइनीज़ अमेरिकन प्लैनिंग काउन्सल के ऑस्कर जी; फॉरेस्ट रेस्ट हिल्स कम्युनिटी हाउस के बैरी ओ'कॉनर, ग्रैंड स्ट्रीट सैटलमेंट हाउस के जॉनी सेपेदा तथा रोज़एन गोमेज़; लिंकन स्कवैयर नेबरहुड़ सेन्टर की स्टैफनी पिंडर तथा रॉक्सी मैक्कैरल; युनाइटेड पुएर्तो रीको ऑर्गेनाइज़ेशन ऑफ सनसेट पार्क की एलिज़ाबैथ रैमपिएर; वायडब्यूसीए फ्लशिंग सेंटर के सोंगयुन कांग तथा वॉन कांग; यूथ मिनिस्ट्रीज़ ऑफ पीस एण्ड जस्टिस के एलैक्साई टॉरेस-फ्लैमिंग।